an>

Title: Regarding problems of Paramilitary forces.

श्री संतोख सिंह चौधरी (जालंधर) : महोदय, मैं बहुत ही महत्वपूर्ण विÂाय की तरफ ध्यान दिलाना चाहता हूं। हमारे देश में पैरामिलिट्री फोर्सेस जिनमें सीआरपीएफ, बीएसएफ, आईटीबीपी, सीआईएसएफ हैं ये हमारी सरहदों पर या दूसरे इलाकों में देश की सुरक्षा में अपना योगदान दे रही हैं। ये न केवल सरहदों की रक्षा कर रहे हैं बल्कि नक्सलवाद, आतंकवाद से भी लड़ाई कर रहे हैं। देश में जहां दंगा-फसाद होता है, वहां भी ये पहुंच कर स्थिति सामान्य करते हैं। इसके अलावा देश के महत्वपूर्ण स्थानों की भी ये रक्षा करते हैं। मैं समझता हूं कि डिफेंस परसोनल के बराबर ही इनका कंट्रीब्यूशन देश के लिए होता है। लेकिन जब ये रिटायर होते हैं या इन्हें गोली लगती है या इंजर्ड होने के बाद रिटायर होते हैं तो इन्हें जो सुविधाएं मिलनी चाहिए, वे नहीं मिलती हैं। लेकिन जब ये रिटायर होते हैं या जब ये इंजर्ड होते हैं, तो जो सहूलियतें इनको मिलनी चाहिए, वे नहीं मिलती हैं। डिफेन्स परसोनल्स और पैरा-मिलिट्री परसोनल्स की सर्विस में भी बहुत डिस्पैरिटी है। मैं आपके मार्फत भारत सरकार से यह निवेदन करना चाहता हूँ कि पैरा-मिलिट्री फोर्सेज को भी वन रैंक-वन पेंशन में शामिल किया जाए और जो लोकल हॉस्पीटल्स हैं, वहाँ इनको सी.जी.एच.एस. फैसिलिटी प्रोवाइड किया जाए। जब ये लड़ाई में घायल होते हैं या शहीद होते हैं, तो इनके आश्रितों को प्रायरिटी के तौर पर नौकरी दी जाए और जो विडोज़ हैं, उनको फुल पेंशन दिया जाए। डिफेन्स फोर्सेज और पैरा-मिलिट्री सर्विस में जो पे-स्केल है, उसे बराबर रखा जाए। धन्यवाद।